महात्मा गाँधी के विचारों से प्रेरित समकालीन कलाकारों के कलात्मक प्रयासों पर एक नजर

रूबी चौधरी

शोध छात्रा

Reference to this paper should be made as follows:

रूबी चौधरी,
महात्मा गाँधी के विचारों से प्रेरित समकालीन कलाकारों के कलात्मक प्रयासों पर एक नजर,
Artistic Narration 2017, Vol. VIII, No.2, pp.50 - 56
http://anubooks.com/?page_id=485

सारांश

महात्मा गाँधी जी को किसी परिचय की आवश्यकता नहीं है वे हमारे देश के अनमोल रत्नों में से एक है उन्होंने न केवल देश के उत्थान के लिए कार्य किए अपितु देश के कलाकारों को तथा उनकी कलाओं को भी प्रोत्साहन दिया। गाँधी जी का कहना था कि ''मेरे पास दुनियावालों की सिखाने के लिए कुछ भी नया नहीं हैं। सत्य एवं अहिंसा तो दुनिया में उतने ही पुराने हैं जितने हमारे पर्वत हैं।'' कला हर तरह की हिंसा, चाहे वह दैहिक हो या मानसिक, उसका प्रतिकार है। अहिंसा के अपने संदेश के अतिरिक्त महात्मा जी ने आजादी हासिल करने के लिए कठोर उपाय करने का आग्रह किया। गांधी जी के वचनों से प्रेरित होकर कई समकालीन कलाकारों ने कलात्मक कार्य किए है तथा अपनी कलाकृतियों से गांधी जी के विचारों को जन–जन तक पहुँचाने का कार्य किया है जिनका वर्णन इस लेख में प्रस्तुत है।

गाँधी जी ने कहा था कि जहाँ अहिंसा है वहाँ सत्य है और जहाँ सत्य है, वहाँ ईश्वर है। कला को मानवीय सत्य की रक्षा का ध्येय लेकर चलने का समय आ गया है और यह सत्य बिना हिंसा को निर्मूल किये नहीं पाया जा सकता। महात्मा गाँधी की कार्य शैली की विशेषता यह थी कि उनका जीवन राजनैतिक, सामाजिक चिन्तन यहाँ तक की उनकी आर्थिक शैली भी पूर्णतया आध्यात्मिक सिद्धान्तों से प्रेरित हैं। ऐसा लगता है मानो वे सभी क्षेत्रों में सत्य–अहिंसक जीवन शैली की लक्ष्य पूर्ति के लिए ही बने हो। उनके आध्यात्मिक आदर्शवाद में ईश्वर नैतिकता, अहिंसा, साधना की श्रेष्ठता तथा सत्य का महत्व कहीं भी दृष्टि से ओझल नहीं होते हैं।[1] 1930 में गाँधी जी ने कहा था ''जिस आजादी के लिए हम लड़ रहे हैं, उसमें जो रास्ता हमने अपनाया है, वह सत्य और अहिंसा पर आधारित हैं।'' अहिंसा हमारी संस्कृति और धर्म ग्रन्थों की आत्मा हैं। वह वर्षों से अनुसंधान किए गए, शाश्वत दर्शन के आधार पर ग्रहण की हुई प्रतिभा हैं। यह हमारी पवित्रता की अमिट निशानी हैं। ''अहिंसा एक ऐसा शुद्ध आचरण हैं, जो स्वयं में कष्ठ उठाकर या अपने निहित भौतिक सुखों को बलिदान करके दूसरों को सुख पहुँचाता है।'' गाँधी जी का कहना था कि ''मेरे पास दुनियावालों की सिखाने के लिए कुछ भी नया नहीं हैं। सत्य एवं अहिंसा तो दुनिया में उतने ही पुराने हैं जितने हमारे पर्वत हैं।'' कला हर तरह की हिंसा, चाहे वह दैहिक हो या मानसिक, उसका प्रतिकार है। अहिंसा के अपने संदेश के अतिरिक्त महात्मा जी ने आजादी हासिल करने के लिए कठोर उपाय करने का आग्रह किया।

स्वतंत्रता आन्दोलन से प्रेरित – भारतीय कला व कलाकारों के प्रेरणास्त्रोत महात्मा गाँधी कला और कलात्मक निर्माण में हमेशा एक समाज की सामाजिक, आर्थिक और बौद्धिक परिवेश का प्रतिबिम्ब दिया है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की अवधि देश भक्ति से भरी थी जब सब लोग महान पुरूषों की नेतृत्व में एक साथ काम करते थे। यह एक अच्छी बात थी कि भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का सार्वजनिक, जीवन पर जबरदस्त प्रभाव पड़ा था। 19वीं शताब्दी के अंत और 20 वीं शताब्दी की शुरूआत में इसे एक अधिक संगठित और चरम चरण में पेश किया।[2] जिसने समकालीन कलाकारों को भी प्रभावित किया। इसलिए उन्होनें अपने चित्रों के लिए एक विषय के रूप में स्वतंत्रता संग्राम को चुना। इन कलाकारों को लगा कि यह ''स्वदेशी'' और राष्ट्रीय आन्दोलन के लिए एक तरह की सेवा थी दूसरी ओर कुछ राष्ट्रीय नेताओं जैसे महात्मा गाँधी और जवाहरलाल नेहरू ने भी पारम्परिक भारतीय कला से देशभक्ति की अभिव्यक्ति के रूप में मदद की। कुछ हद तक इन राष्ट्रीय नेताओं ने इन कलाकारों के साथ इस संबध में काम किया और भारतीय नेशनल मूवमेंट के प्रति अपनी वफादारी को व्यक्त किया।[3]

एक स्वतंत्रता सेनानी के रूप में गाँधी के जीवन की शुरूआत से, उनके कई समकालीन भारतीय और विदेशी कलाकारों द्वारा उनके चित्र बनाए गये। कभी–कभी कलाकारों को अवसर मिलता कि वे

गाँधी जी को मॉडल के रूप में उपस्थित देखकर अपनी कृति बना सकें। यह जानना बहुत उत्सुक करता है कि अपने कठिन कार्यक्रमों के भीतर सन्तुलन बनाकर कैसे उन्होनें कलाकारों की साथ अच्छे रिश्ते बनाए व कला व कलाकारों को प्रोत्साहित भी करते थे।

कलाकारों के प्रेरणास्त्रोत – शान्ति निकेतन के कलाकार नंदलाल ठोस ने महात्मा गाँधी के जीवन से प्रेरणा लिए कलाकारों की कुँजी को पूर्ण रूप से व्यक्त किया है। उन्होनें लिखा हैं महात्मा जी भले ही कलाकार न हो जैसे कि हम पेशेवर कलाकार है परन्तु फिर भी वे एक सच्चे पेशेवर कलाकार है, उन्होनें अपने पूरे जीवन में व्यक्तित्व और आदर्शों को ही बनाया हैं जो कि अविस्मरणीय हैं। उनका मानना था कि मिट्टी के मनुष्य को भगवान बनाया जाए। उनका यह आदर्श पूरी दुनिया के कलाकारों को प्रेरित करता हैं।[4]

1930 में, दाँडी मार्च के दौरान, गाँधी भारत के सबसे अधिक विश्वसनीय और व्यापक रूप से प्रसारित चिन्हों में से एक बन गए। शान्ति निकेतन में इस घटना से प्रेरित होकर अनेकों कृतियाँ बनी। 1920 और 1930 के दशक में कला प्रक्रिया में लोगों ने एक नयी राष्ट्रीय गाँधीवादी कला को अपनाया नंदलाल बोस की गाँधी की लिनोकट छवि ''बाबूजी'' इस अवधि का उदाहरण हैं। यह सागौन की लकड़ी पर तैयार किया गया था, जिसमें उनके 78 अनुयायियों के साथ गाँधी जो को दिखाया गया था। यह कई ऐसे राजनीतिक पोस्टरों मे से एक है, जो बोस ने ''सविनय अवज्ञा आन्दोलन'' के दौरान उत्पादित किए थे जिसमें से अधिकतर नष्ट कर दिए गये थे। यह कलाकार के जीवन में एक रानीतिक अंतः क्रिया का दुर्लभ जीवित अवशेष है यह अंतराल है, जो अपने नष्ट किए गए उत्पादों की तरह, उनकी कलात्मक जीवनी में सीमांत बने। दॉडी मार्च पर अन्य सभी रचनाएँ शान्तिनिकेतन के कला विद्यालय पर कोई प्रतिबिंब नहीं थी लेकिन बौद्धिक से भावनात्मक व्यक्तिगत कलाकारों के मुख पर परिलक्षित होती है।

1936 में गाँधी जी ने नंदलात बोस को लखनऊ में कांग्रेस के मण्डप को सजाने के लिए बुलाया, जहाँ कलाकारों की भारत का इतिहास और परम्परा स्थापित करने का अवसर मिला। नंदनाल बोस व शान्तिनिकेतन से उनके साथ आयी उनकी पूरी टीम ने पूरे प्रदर्शनी हॉल को रीड, बॉस और लकड़ी की सहायता से बहुत सरल तरीके से सजाया। 28 मार्च 1936 को प्रदर्शनी ग्राऊड में अपने भाषण में गाँधी ने कहा ''मेरे दिमाग में पहली बार एक सच्ची ग्रामीण प्रदर्शनी की अवधारणा ठोस रूप से सामने आती हैं। यह इस प्रदर्शनी का उद्देश्य है कि जो चीजे हम शहर में पसंद नहीं करते वे ग्रामीणों के लिए इस्तेमाल करना तथा हमारे लाभ के लिए इस्तेमाल की जा सकती है।'' कलाकारों के बारे में उन्होंने कहा ''नंदलाल और शान्तिनिकेतन के प्रसिद्ध कलाकार और उनके सहकर्मियों ने ग्रामीणों की कलाओं को कलात्मक प्रतीकों के रूप में प्रदर्शित किया हैं वह सराहनीय हैं आप सबने बहुत अच्छा काम किया।'' नंदलाल बोस और उनके श्रमिकों द्वारा निर्मित आर्ट गैलरी में जब आप जायेगें तो महसूस करेंगे कि कुछ घण्टे यहाँ बिताए। यहाँ पर अन्य सभी वर्ग भी आपको आकर्षित करेगें। यहाँ पर संगीत, सिनेमा जैसा तो कुछ नहीं है परन्तु मैं आपकों आश्वासन होता हूँ कि आपको यहाँ बहुत कुछ सीखने को मिलेगा। उन्होनें ग्रामों इंडसट्रीज एसोसिएशन के गठन की स्थिति के बारे में भी जानकारी दी और ग्रामीण कलाकारों व उनके हस्तशिल्पों की स्थिति और ग्रामीण शिल्पों को पुर्नजीवित करने के लिए भी प्रोत्साहित किया।[5]

1918 में गाँधी जी ने पहली बार शान्तिनिकेतन में कलाकार मुकुल डे से मुलाकात की। वह सरोजनी नायडू के साथ थे और चित्र बनाने के लिए उनकी सहमति माँग रहे थे। गाँधी जी ने कुछ नहीं कहा, केवल मुस्कराए। अगले ही घंटे मुकुल डे चित्र बनाने में लग गये। उनकी साधारण पोशाक और सरल जीवन ने कलाकार को आकर्षित किया। मुकुल डे को महात्मा जी के भीतर एक महान संत और राजनीतिक नेता मिला। जब चित्र पूरा हो गया और गाँधी जी के सामने रखा गया, तो उन्होनें पूछा, ''क्या मैं वास्तव में ऐसा दिखता हूँ? बेशक, मैं अपना चेहरा उस कोण से नहीं देख सकता हूँ। डे के अनुरोध पर उन्होने (गुजराती) में दिनांक और हस्ताक्षर किए।[6]

कलाकार विनायक एस0 मासोजी ने दॉडी मार्च के दौरान मध्य रात्रि में शिविर से गाँधी जी की गिरफ्तारी की चित्रकारी की। दॉडी से अपनी वापसी यात्रा के दौरान गाँधी जी की गिरफ्तारी को सुनकर, उन्होनें गेट्सैमिने के बगीचे में भारी सशस्त्र अज्ञानी सैनिकों की ताकत से आधी रात को यीशु मसीह की गिरफ्तारी के साथ तुलना की। उन्होने अपनी चित्रकला ''द मिडनाइट अरेस्ट'' में इस भावना को व्यक्त किया। जब गाँधी जी और राजकुमारी अमृत कौर ने इस चित्र को कांग्रेस की आर्ट गैलरी में देखा तो उन्होने गाँधी जी से पूछा कि यह चित्र कलाकार की कल्पना पर आधारित है या वास्तव में ऐसा हुआ जैसा कि चित्रित किया गया था। गाँधी जी चुपचाप रहे और मुस्कुराहट के साथ उत्तर देते हैं, ''हाँ, हाँ, वास्तव में बिल्कुल वे इस तरह आये।''[7]

1930 में राऊड टेबल सम्मलेन के दौरान जब गाँधी लंदन में थे तब प्रसिद्ध अमेरिकी मूर्तिकार ''जो डेविसन'' ने उनकी एक मूर्ति की रचना की। वे अपने पहले के कुछ कार्यों की तस्वीर गाँधी जी को दिखाने लाये थे। गाँधी जी ने देखा और कहा ''मैं देखता हूँ कि आप नायकों को गीली मिट्टी से बनाते हैं।[8] गाँधी जी के धैर्य को डेविसन ने अपने लेखन में व्यक्त कियाः ''गाँधी का चेहरा बहुत गतिमान था, हर हिस्सा फरफड़ा रहा था, और उनके चेहरे पर लगातार बदलाव आ रहे थे। उन्होनें हर समय अपने निष्क्रिय प्रतिरोध का अभ्यास किया जब तक मैनें काम किया। जब तक में काम करता रहा उन्होनें एक बार भी मिट्टी की ओर नहीं देखा और जब कृति पूर्ण हुई तब मैं उनके साथ बैठ गया वह क्षण बेहद सौहार्दपूर्ण था।''[9] उन्होने लिखा गाँधी जी के पास आगन्तुकों का प्रवाह रहता था सदैव उनके पास लोग मिलने आते थे। एक बार एक तीर्थयात्री ने कठोरता से पूछा ''महात्मा का क्या मतलब'' है? तब गाँधी जी ने कहा ''एक तुच्छ व्यक्ति'' ।[10]

सी0 वैकचलम् ने गाँधी जी के बारे में कलाकारों की प्रतिक्रिया के बारे में लिखा था। उन्होनें लिखा ''महात्मा गाँधी को फोटो या प्रचार करना नापसंद था, लेकिन कलाकारों के लिए वह सबसे लोकप्रिय विषय हैं। हर व्यक्ति ने उनकी मुखर चेहरे की मायावी सुन्दरता तथा सभी कोणों के साथ उनकी तस्वीरें ली। उन्होनें सदैव सभी कलाकारों की बैठकर पोस देने से इन्कार करते थे। हालांकि वे इससे प्रसिद्ध हो सकते थे। पर उन्हें यह सब दिखावा पसंद नहीं था।'' वे कला का सम्मान करते थे व कलाकारों का भी परन्तु दिखावा नहीं।[11]

दस वर्ष बाद सी0एफ0 एन्ड्रयूज के परिचय के साथ मुकुल डे गाँधी जी से फिर मिले, वे एक अलग माध्यम में काम करना चाहते थे, जब अचानक गाँधी जी ने उन्हें पहचान लिया। उन्हें आश्चर्य हुआ जब गाँधी जी ने उन्हें साबरमती आश्रम के विद्यालय भवन के एक कमरे में रहने की इजाजत दे दी। डे

ने चार अलग–अलग चित्र बनाये और गाँधी जी के कुछ पेसिंल स्केच तथा कस्तूरबा जी का चित्र बनाया। गाँधी जी बहुत दयालु थे उन्होनें डे को साबरमती में कला विद्यालय खोलने के लिए पेशकश की।

के0 वेकटप्पा जो कि शान्तिनिकेतन के एक प्रसिद्ध कलाकार व छात्र थे उन्होनें ऊटी के विभिन्न मौसम और मूड पर बने चित्रों से गाँधी जी को प्रभावित किया। वेंकटप्पा जिन्हें बारीकी से विस्तार रंग और लाइन में महारथ हासिल थी। उनके चित्रों मे शान्ति का माहौल उत्पन्न होता है तथा यह प्रतीत होता है कि कलाकार ने प्रकृति को लम्बे और गहन अध्ययन के साथ अपने चित्रण में आत्मसात कर लिया हैं। गाँधी जी ने कलाकार से कहा ''मैं खुश हूँ''। मेरा आशीर्वाद आपके साथ हैं, लेकिन मैं एक सुझाव दे सकता हूँ। अगर चरखा आपको आकर्षित करता हैं और अगर आप चरखा ग्रामीणों के लिए क्या महत्व रखता है इसे चित्रित कर सकते हैं तब मुझे और अधिक प्रसन्नता होगी।[12] यह निश्चित रूप से अगर आपको प्रभावित करता हैं तो सही है यदि नहीं भी करता तो आप पर कोई प्रतिबिंब नहीं होगा।

'राष्ट्र के पिता' कई मास्टर्स और समकालीनों के लिए एक पंसदीदा विषय रहे है। उनके बीच प्रधान सुबोध गुप्ता, जीतिश कालत और अतुल डोडिया जैसे भारत के तीन समाकालीन कलाकार हैं। विशेष रूप से अतुल डोडिया महात्मा जी की शिक्षा से गहराई से प्रेरित हैं। ये गाँधी जी के ऐतिहासिक दर्षष्टिकोण के प्रति उत्सुक रहे हैं तथा गाँधी जी के सन्देश इनके कार्यों में प्रतिबिम्बित होते हैं। कलाकार अपने चित्रों के माध्यम से महात्मा के अहिंसा, शांति और सहिष्णुता के संदेश को पुनः सन्दर्भित करने का प्रयास कर रहें हैं। उनके शो, ''अंहिसा के लिए एक कलाकार'' (गैलरी केमौल्ड, मुंबई 1999) इस दिशा में पहला कदम था। जल रंग की श्रृंखला से उभरा, उन्होनें हरिपुरा कांग्रेस में चित्रित किया जब उन्हें भारत की स्वतंत्रता के 50 वर्षों के जश्न मनाने की पूर्व संध्या पर एक स्मारक बनाने का अनुरोध किया गया। कलाकार के गाँधी जी की तस्वीरों और उनका अध्ययन ध्यानपूर्वक किया। उन्होनें गाँधी जी के दुबले शरीर, दृश्यमान पसलियों, उदासीन छवियों को पुननिर्माण करने की माँग की।

श्रृंखला के विकास के बारे में बताते हुए अतुल डोडिया ने एक निबंध में उल्लेख किया हैं : ''एक युवा लड़के के रूप में जिसका परिवार सौराष्ट्र से आया था महात्मा गाँधी मेरे बचपन का एक अंतरंग हिस्सा थे। मैं उनसे अकसर आकर्षित होता था इसीलिए किसी ने कहा कि गाँधी मेरे लिए एक आर्वती विषय हैं। उनके बहुत प्रशांसित कार्य ''पिता'' में पूर्वजों के रूपों को प्रस्तुत किया तथा अधिक सार्वभौगिक वंश की कला में प्रस्तुत किया हैं।

'बापू' नामक एक ग्रप शो, उनके जीवन और काम की व्याख्या करने का एक प्रयास था। यह शो गायत्री सिन्हा द्वारा आयोजित किया गया था तथा सैफरन आर्ट जोकि बार्कले स्ववायर गैलरी द्वारा सहयोग प्राप्त था। इसमें कलाकारों नवजोत, मनीषा पारेख, जगन्नाथ पांडा, रियास कोमु, सुरेन्द्रन नायर, आनंदजीत रे, सचिन कों, वसुधा धोज्हूर, अशिम पुराकाय, गीगी स्केरिया, राम रहमान और विवेक विलासिनी द्वारा काम किया गया।[13]

एक और उल्लेखनीय प्रयोग हैं जीतिश कालट की ''पब्लिक नोटिस–2'', बोधी कला एसोशियशन द्वारा सिंगापुर बिनाले 2008 में प्रदर्शित किया गया था। जो इनके पहले की काम की सिक्केल थीं जो

भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के प्रसिद्ध भाषण ''फ्रीडम एट मिडनाइट'' से प्रेरित था। इन्होनें महात्मा गाँधी के नमक मार्च की पूर्व संध्या पर ऐतिहासिक साबरमती के नदी के किनारे पर संस्थापन का निर्माण किया।[14]

हिडोल ब्राह्मभट्ट ने कई diptych और triptych पर कार्य किया इनमें से करीब 30 लोग जो आज के संदर्भ में राष्ट्र पिता और उनके दर्शन की प्रासंगिकता का पता लगाते हैं। कई संवेदनशील कलाकारों ने महात्मा के मूल्यों को तथा उनकी याद में भी चित्रण किया है। कई कलाकारों की रचनाओं में महात्मा जी के साथ युद्ध, हिंसा और झगड़े की झलक वाली छवियाँ पृष्ठभूमि को धक्का देती हैं, जो विडम्बना की भावना को बढ़ाती है। वे अपनी रचनाओं को रेखांकित करते हुए कहते है, ''दुनिया में अत्यधिक संघर्ष दिख रहा है।'' सामाजिक ताना–बाना बहुत नाजुक हो गया हैं ऐसी परिस्थितियों में, हमें महात्मा गाँधी की विचारधारा को अपने वास्तविक अर्थों में पालन करना चाहिए, केवल बोलने से कुछ नहीं होगा। यही वह काम हैं जो मैं अपने कामों के माध्यम से व्यक्त करना चाहता हूँ।

देबंजन राय ने गाँधी जी को भारत के लिए रूपक के रूप में प्रयोग किया, जिसने खुद को आधुनिकता और विलासिता से अलग किया और तपस्या को अपनाया। कोलकाता स्थित एक कलाकार ने उनकी एक श्रृंखला बनायी हैं जिसमें उनकी विशेषता हैं। जैसा कि स्पष्ट हैं, महात्मा लोकप्रिय और मुख्यधारा की कला में नयी पीढ़ी के लिए एक आइकन नैतिक बल का एक शुभंकर माना जाता है।[15]

चित्रकार धीरेन डे ने भी महात्मा गाँधी का 'प्रार्थना में लीन' नाम चित्र बनाया, ''जिसमें उन्होनें सत्य, अहिंसा और प्रार्थना यही गाँधी जी का बल था'' उसे दर्शाया है।[16] बी0सी0 सान्याल जैसे कलाकारों ने भी गाँधी जी के देश को पाश्चात्य प्रभाव से मुक्त कराने के उद्देश्य से चलाये जा रहे 'असहयोग आन्दोलन' में भी बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। सान्याल गाँधी जी से बहुत प्रभावित थे वे स्वयं कहते थे कि ''महात्मा गाँधी का अहिंसा का सिद्धान्त और अंग्रेजों के साथ असहयोग ने भी मुझे प्रभावित किया। जब गाँधी जी ने यह अपील की कि सभी भारतीय बुद्धि जीवियों को अंग्रेजों के साथ असहयोग करना चाहिए तो मैनें उच्च शिक्षा का परित्याग कर दिया, अपने कॉलेज को छोड़ दिया क्योंकि यहाँ ने प्रिसीपल एक अंग्रेज थे।''

भारत वर्ष में ही नहीं बल्कि तमाम दुनिया में शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा जिसने महात्मा गाँधी का नाम न सुना हो और जिसके दिल में उनके प्रति श्रद्वा और भक्ति न हो। इसका मुख्य कारण यह है कि उनका जीवन त्याग, तपस्या और सच्चाई से ओत प्रोत था। वे सदा स्वयं कष्ट उठा कर प्राणीमात्र के दुखों को दूर करने का प्रयत्न करते रहते थे। उन्होनें सोते हुए भारत को जगाकर उसमें राष्ट्रीय चेतना का संचार किया। संसार को सत्य और अहिंसा का सन्देश दिया। गाँधी जी सदैव सत्य के मार्ग पर चले उनका मानना था कि जहाँ सच्चाई होती है वहाँ ईश्वर भी मदद करता हैं। गाँधी जी धार्मिक व्यक्ति थे वे सभी धर्मों में अपना विश्वास रखते थे। उनका मानना था कोई धर्म या व्यक्ति ऊँचा या नीचा नहीं होता ईश्वर एक है उसने हम सबको बनाया है इसीलिए हम सब एक हैं।

सन्दर्भ सूची –

1 कला दीर्घा, लखनऊ : समकालीन कला का विकास, अक्टूबर 2010, vol-11, no.21.

2 गाँधी चित्रावली, डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद, प्रताप सिंह लूरिगया जॉब प्रिंटिंग प्रेस, ब्रह्मापुरी, अजमेर,

3 इतिहास बोलता है, ''अब गाँधी चुप नहीं रहेगा'', धर्म दिवाकर, प्रभा दिवाकर प्रकाशन, मेरठ, 2009.

4 नंदलाल बोस, ''एक सच्चे कलाकार'', गाँधी जी : उनका जीवन और कार्य {मुम्बई : कर्नाटक पब्लिशिंग हाऊस, 1944},पृष्ठ सं0 292.

5. Vivan sundaram and others, addressing Gandhi:125 years of mahatma Gandhi , (new delhi: safdar hashmi memorial trust,1995), p. 144.

6. Mukul dey, portraits of mahatma Gandhi (Calcutta: orient longman Ltd,1948), preface.

7. Vinayak s. masoji, “midnight arrest,” in gandhiji: his life and work, p. 277.

8. Norman cousins, ed., profiles of Gandhi (America remembers a world leader), jo Davidson, “between sitting with Gandhi,” (delhi: Indian book company, 1969), p.17.

9. Ibid.p. 18.

10. Ibid.

11. Dhiren Gandhi, “prayer and other sketches of Mahatma Gandhi,” C.venkatachalam, the moods of mahatma (Bombay: nalanda publishing house, 1948), introduction.

12. Young india, 11 august 1927, p. 258.

13. https://www.saffronart.com

14. Jitish Kallat, public notice 2, published by art gallery of new south wales and Sherman contemporary art foundation, 2015.

15. https://www.aicongallery.com

16 गाँधी चित्रावली, डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद, प्रताप सिंह लूरिगया जॉब प्रिंटिंग प्रेस, ब्रह्मापुरी, अजमेर।